

**दुआ-43****दुआए रोयते हेलाल****बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम**

ऐ फ़रमाबरदार, सरगमें अमल और तेज़ रौ मखलूक और मुकरर्रा मन्ज़िलों में यके बाद दीगरे वारिद होने और फ़लक नज़्म व तदबीरें तसरूफ़ करने वाले में उस ज़ात पर ईमान लाया जिसने तेरे ज़रिये तारीकियों को रौषन और ढकी छिपी चीज़ों को आशकार किया और तुझे अपनी शाही व फ़रमानरवाई की निशानियों में से एक निशानी और अपने ग़लबे व इक्तेदार की अलामतों में से एक अलामत करार दिया और तुझे बढ़ने, घटने, निकलने, छिपने और चमकने गहनाने से तसखीर किया। इन तमाम हालात में तू उसके ज़ेरे फ़रमान और उसके इरादे की जानिब रवां दवां है। तेरे बारे में उसकी तदबीर व कारसाज़ी कितनी अजीब और तेरी निस्बत उसकी सनाई कितनी लतीफ़ है, तुझे पेश आईन्द हालात के लिये नये महीने की कलीद करार दिया। तो अब मैं अल्लाह तआला से जो मेरा परवरदिगार, मेरा ख़ालिक और तेरा ख़ालिक मेरा नक्श आरा और तेरा नक्श आरा और मेरा सूरतगर और तेरा सूरत गर है सवाल करता हूं के वह रहमत नाज़िल करे मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर और तुझे ऐसी बरकत वाला चान्द करार दे, जिसे दिनों की गर्दिशें जाएल न कर सकें और ऐसी पाकीज़गी वाला जिसे गुनाह की कशाफ़तें आलूदा न कर सकें। ऐसा चान्द जो आफ़तों से बरी और बुराइयों से महफूज़ हो। सरासर यमन व सआदत का चान्द जिस में ज़रा नहूसत न हो और सरापा ख़ैर व बरकत का चान्द जिसे तंगी व उसरत से कोई लगाव न हो और ऐसी आसानी व कशाइश का जिस में दुश्चारी की आमैज़िश न हो और ऐसी भलाई का जिसमें बुराई का शाएबा न हो। गरज़ सर ता पा अम्न, ईमान, नेमत, हुस्ने अमल, सलामती और इताअत व फ़रमा बरदारी का चान्द हो, ऐ अल्लाह! मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और जिन जिन पर यह अपना परतो डालें उनसे बढ़कर हमें खुशनूद और जो जो उसे देखे उन सबसे ज़्यादा दुरूस्तकार और जो जो इस महीने में तेरी इबादत करे उन सबसे ज़्यादा खुशनसीब करार दे। और हमें इसमें तौबा की तौफ़ीक़ दे और गुनाहों से दूर और मासियत के इरतेकाब से महफूज़ रखे और हमारे दिल में अपनी नेमतों पर अदाए शुक्र का वलवला पैदा कर और हमें अम्न व आफ़ियत की सिपर में ढांप ले और इस तरह हम पर अपनी नेमत को तमाम करके तेरी फ़राएजे इताअत को पूरे तौर से अन्जाम दें। बेशक तू नेमतों का बख़शने वाला और काबिले सताइश है। रहमते फ़रावां नाज़िल करे अल्लाह मोहम्मद (स0) और उनकी पाक व पाकीज़ा आल (अ0) पर।